रसूल-ए-इन्सानियत

दुनिया के हर इन्सान को गर्व करना चाहिए कि हम इन्सानों मे से एक ऐसा इन्सान पैदा हुआ जिससे इन्सानियत का सर ऊंचा और नाम रोशन हुआ। अगर आप स०अ० न आते तो दुनिया का नक़्शा क्या होता?और हम इन्सानियत की शराफ़त और महानता के लिये किसको पेश करते?मुहम्मद रसूलल्लाह स०अ० हर इन्सान के हैं, मुहम्मद रसूलल्लाह स०अ० इस दुनिया की रौनक़ और इन्सानों की महानता हैं, वो किसी क़ौम की जागीर नही, उन पर किसी देश का ज़ोर नही वो पूरी मानवता के लिये गर्व हैं, क्यों आज किसी देश का इन्सान गर्व व खुशी के साथ ये नही कहता कि मेरा इस इन्सान से संबंध है जिसमे मुहम्मद स०अ० जैसे सम्पूर्ण मानव पैदा हुए।

आज मानव का कौन सा वर्ग है जिस पर आप स०अ० का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष एहसान नही?!

क्या सारी इन्सानी बिरादरी पर आप स०अ० का एहसान नही कि रातों को उठ–उठ कर आप स०अ० गवाही देते थे कि खुदाया! तेरे सब बन्दे भाई–भाई हैं।

क्या सारी दुनिया पर आप स०अ० का एहसान नही कि सबसे पहले दुनिया ने आप स०अ० ही कि ज़बान से सुना कि खुदा किसी देश, क़ौम, नस्ल व बिरादरी का नही, सारे जहानों और दुनिया के सब इन्सानों का है। जिस दुनिया मे आर्यों का खुदा, यहूदियों का खुदा, मिस्रियों का खुदा, ईरानियों का खुदा, कहा जाता था वहां (अल्हम्दुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन्) की हक़ीक़त का ऐलान हुआ और उसको नमाज़ का हिस्सा बना दिया गया।

हमारी आपकी दुनिया मे हकीम व फ़लसफ़ी भी आये, साहित्यकार व शायर भी, विजयी भी, राजनीतिज्ञ व क़ौमी मार्गदर्शक भी, वैज्ञानिक भी आये, मगर किस के आने से दुनिया मे वो बहार आयी जो पैग़म्बरों के आने से, फिर सबसे आख़िर, सबसे बड़े पैग़मबर मुहम्मद स०अ० के आने से आयी?! कौन अपने साथ वो हरियाली वो बरकतें, वो रहमतें, मानवता के लिये वो दौलतें वो नेमतें लेकर आया जो मुहम्मद स०अ० लेकर आये।

हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली नदवी रह०
(कारवान–ए–मदीना : पृष्ठ सं०: ७६–७७)

www.abulhasanalinadwi.org

मासिक
अरफ़ात किरण
रायबरेली

अंक –2 वर्ष–3
फ़रवरी २०११ ई०
सफ़रुलमुज़फ़्फ़र १४३२ हि०

संरक्षक
हज़रत मौलाना सैय्यद
मुहम्मद राबे हसनी नदवी
अध्यक्ष – दारे अरफ़ात

निरीक्षक
मौ० वाज़ेह रशीद हसनी नदवी
जनरल सेकेरेट्री– दारे अरफ़ात
मौ० अहमद अली हसनी नदवी
डायरेक्टर– दारे अरफ़ात

सम्पादकीय मण्डल
बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी
मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी
अब्दुस्सुबहान नाखुदा नदवी
महमूद हसन हसनी नदवी
मो० हसन नदवी

सह सम्पादक
मो० नफ़ीस ख़ाँ नदवी

प्रति अंक–8रू वार्षिक–80रू०
सम्मानीय सदस्यता–500रू० वार्षिक

मर्कज़ुल इमाम
अबिल हसन अल–नदवी
दारे अरफ़ात, तकिया कलां
रायबरेली,यू0पी0.229001
www.abulhasanalinadwi.org
FAX-0535-2211188

एस० ए० आफसेट प्रिन्टर्स, मस्जिद के पीछे, फ़ाटक अब्दुल्ला ख़ाँ, सब्ज़ी मण्डी, स्टेशन रोड रायबरेली से छपवाकर आफिस अरफ़ात किरण मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल–नदवी दारे अरफ़ात तकिया कलां रायबरेली से प्रकाशित किया।

بسم الله الرحمن الرحيم

सम्पादकीय

हिदायत की किताब

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

अल्लाह तआला ने हर ज़माने में अपने बन्दों की हिदायत के लिये पैग़म्बर भेजे, उन पर आसमानी किताबें उतारी ताकि उनकी रोशनी मे इन्सानों को सही रास्ता मिल सके, आखिरी पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद स0अ0 आखिरी किताब कुरआन मजीद लेकर सारी दुनिया की रहनुमाई के लिये तशरीफ़ लाये, कुरआन मजीद में कई जगहों पर खुद हज़रत मुहम्मद स0अ0 के बारे में आता है कि आपको पूरी दुनिया के लिये रसूल बनाकर भेजा गया; एक जगह इरशाद है: (अनुवादः और हमने आपको तमाम लोगों के लिये बशीर व नज़ीर बनाकर भेजा है); मानने वालों के लिये बशारत है और न मानने वालों को दोज़ख़ की आग से ख़बरदार किया गया है।

जिस तरह आप स0अ0 को पूरी दुनिया के लिये भेजा गया है उसी तरह आप पर जो किताब उतारी गयी है वो तमाम लोगो की हिदायत के लिये उतारी गयी है इसीलिये इसको (हुदल्लिन्नास) खुद कुरआन मजीद में कहा गया है ये सभी लोगो के लिये हिदायत है, सच्चा और सीधा रास्ता बताने वाली किताब है, लेकिन इससे फ़ाएदा वही लोग हासिल करते हैं जो अपने पैदा करने वाले को पहचानते हैं। उससे डरते हैं, और परहेज़गारी की ज़िन्दगी अपनाते हैं। इसी कुरआन मजीद मे कहा गया है: (अनुवादः ये किताब हिदायत है परहेज़गारों के लिये)

वास्तव में ये किताब दुनिया के सभी लोगो को सम्बोधित करती है और उनको सही रास्ता बताती है, लेकिन वास्तव में इससे फ़ाएदा वही लोग उठाते हैं जो फ़ाएदा उठाना चाहते हैं। और जिनके अन्दर ज़िद और हठधर्मी होती है उनके बारे मे कुरआन मजीद में विभिन्न जगहों पर ये कहा गया है कि "फिर उनके बारे में गुमराही का फ़ैसला कर दिया जाता है"।

वर्तमान युग में बहुत से लोगों को ये ग़लत फ़हमी है कि ये मुसलमानों की किताब है जबकि वास्तव में ये तमाम इन्सानों की किताब है, हर एक को मुख़ातब करती है और फ़ाएदा उठाने का रास्ता बताती है।

और ये बात गुज़र चुकी है कि ये किताब सभी की हिदायत के लिये उतरी है लेकिन इससे हिदायत हासिल वही लोग करते हैं जो परहेज़गार और मुत्तक़ी हों। सूरह बक़रा में जो कुरआन मजीद की सबसे लम्बी पहले पारे की पहली सूरत है उसमे लोगों को तक़वा व परहेज़गारी अपनाने और खुदा से डरने का नुस्ख़ा बताया गया है ताकि अमली तौर पर इससे हिदायत के रास्ते खुलते चले जांए और उसका फ़ाएदा आम हो। इसी आयत में तमाम लोगो को उमूमियत के साथ ख़िताब करके इरशाद होता है:

(अनुवादः ऐ लोगो! अपने उस परवरदिगार की बन्दगी करो जिसने तुमको भी पैदा किया और उन लोगो को भी पैदा किया जो तुमसे पहले हुए हैं ताकि तुम मुत्तक़ी बन जाओ) जब मारफ़त होती है तो आदमी झुकता है। इन्सान जब अपने ख़ालिक़ को पहचानता है तो उसके आगे सर झुका देता है। और तक़वा बन्दगी का उच्चतम् स्तर है। पहला चक्र मारफ़त का है। किसी भी चीज़ का लिहाज़ उसी समय होता है जब उसकी पहचान होती है। वाक़्या मशहूर है कि एक बार निज़ाम हैदराबाद भेष बदल कर रियासत का दौरा करने निकले, रात का समय था, एक तांगा किराये पर किया, रास्ते मे तांगे वाले से बातें शुरू कीं, वो बेतकल्लुफ़ बातें करने लगा, निज़ाम के बारे मे और रियासत के हाल चाल के बारे में पूछा, वो दिलजला हुआ था, उसने दिल के फफोले फोड़े और खूब खरी खोटी सुनाई, निज़ाम सुनते रहे, जब उतरने का समय हुआ तो उसने पैसा गिनने के लिये माचिस जलाई निज़ाम के चेहरे पर निगाह पड़ते ही बेहोश हो गया, जब तक उसने पहचाना नही सब कुछ सुनाता रहा, जब पहचाना तो पैरों के नीचे से ज़मीन निकल गयी, ये बात मानव प्रकृति मे है, जब तक पहचान न हो उस समय तक लिहाज़ नही पैदा होता, ख़ालिक़–ए–कायनात ने जो इन्सान की नफ़्सियात का भी ख़ालिक़ है इसलिये स्पष्ट किया कि अपने परवरदिगार की इबादत करो जिसने तुमको भी पैदा किया और तुमसे पहले वालों को भी पैदा किया।

इन्सान ग़ौर करे कि उसकी हक़ीक़त क्या है?कैसे उसका वजूद हुआ? एक नापाक क़तरा कहां से कहां पहुंचा? अल्लाह तआला ने कुरआन मजीद में उसकी तफ़सील जिस तरह बयान फ़रमाई है वो बजाए खुद कुरआन मजीद का एक चमत्कार है। (अनुवादः और हमने इन्सान को मिट्टी के खुलासा से पैदा किया और फिर उसको एक मज़बूत जगह नुत्फ़ा बनाकर रखा और फिर नुत्फ़ा का लोथड़ा बनाया फिर लोथड़े की बोटी बनाई फिर लोथड़े की हड्डी बनायी फिर हड्डी पर गोश्त चढ़ाया फिर उसको एक दूसरी ही मख़लूक़ बनाकर खड़ा कर दिया, पस वो अल्लाह बरकत वाला है जो सबसे बेहतर वजूद बख़्शने वाला है;)

जिसने सबसे पहले आदम का मिट्टी का पुतला पैदा किया, उसमे रूह फूंकी फिर उन्ही से उनका जोड़ा बनाया, और फिर उन दोनो से इस दुनिया को मर्द औरतों से आबाद किया। मां के पेट में बच्चे की बढ़ोत्तरी उस ख़ालिक़ ही की क़ुदरत का दृष्य है। और कुरआन मजीद ने इसकी जो तफ़सील चौदह सौ साल पहले बयान की वो उसका एक चमत्कार है। एक यही चीज़ उस पैदा करने वाले की तारीफ़ के लिये काफ़ी है।

जिस ज़ात ने पैदा किया बेहतर शक्ल अता फ़रमायी, सारी ज़रूरतें पूरी की, नदिया बहायीं, पहाड़ बनाये ताकि ज़मीन अपने केन्द्र पर स्थापित रहे, ऐसे भूकम्प न आयें कि उसमें इन्सानों का वजूद मुश्किल हो जाए। सूरज, चांद और दूसरे गृहों से उसकी संतुलित दूरी रखा ताकि वो आपस मे टकराकर तबाह न हों, और उस समय तक पूरी व्यवस्था चलती रहेगी जब तक उसका फैसला नही आ जाता। जब एक इन्साफ़ पसन्द अक़्ल रखने वाला इन्सान इस पर ग़ौर करता है तो अपने आप उसकी ज़बान से निकलता है: (तेरी ज़ात पाक है तूने ये सब कुछ यूं ही नही पैदा कर दिया)

(शेष पेज 3 पर)

मुबारक महीना और नबी–ए–रहमत

—››› सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी

रबीउलअव्वल का महीना ख़्यालों और विषयों का एक सैलाब लेकर आता है जिसको, न कोई इन ख़्यालात और मज़मूनों का हक़ अदा करने की ख़्वाहिश रखने वाला समेट सकता है और न हक़ अदा कर सकता है। अधिक से अधिक इस खुलासे का ज़िक्र कर सकता है जो कुरआन मजीद मे आया हैः

एक आयत में अरबों को ख़िताब है कि तुम ही में नबी आया और तुम ही में का एक व्यक्ति है और इसको तुम्हारे दुख दर्द की बेहद फ़िक्र और एहसास है, वो तुम्हारा बेहद ख़्याल करने वाला है, और ईमान लेकर आने वालों के लिये तो बहुत ही शफ़ीक़ और रहम दिल है। और एक दूसरी आयत में ख़ुद हुज़ूर स0अ0 को ख़िताब करके फ़रमाया कि तुमको हमने तमाम जहान वालों के लिये रहमत बनाकर भेजा।

दोनो आयतों से हुज़ूर स0अ0 की शख़्सियत का ये पहलू कि "वो सारे जहानों के लिये करम व रहमत हैं" ज़ाहिर होता है, और ये केवल आपकी विशेषता नही है, बल्कि इस ज़मीन व आसमान के ख़ालिक़ का कथन है, जिससे वास्तविकताएं जुड़ी हैं।

हुज़ूर स0अ0 के आने से पहले दुनिया की क्या हालत थी और दुनिया किधर जा रही थी इसको इतिहास के अध्ययन से भी मालूम किया जा सकता है। इन्सान ने ख़ुद इन्सानों को विभिन्न वर्गों में बांट रखा था जिसमे कुछ लोग जो ताक़त और जीवन यापन के साधन के सहारे बड़े बन जाते थे, और दूसरों को ग़ुलाम ही नही बल्कि ग़ुलामो से बदतर बना लेते थे, उनसे केवल ग़ुलामो की तरह ही काम नही लेते थे बल्कि उनको केवल अपनी तफ़रीह के लिये ख़ून बहाने और ज़ुल्म के साथ इस्तेमाल करते थे, अपने जश्न और दावतों के अवसरों पर उनको फुलझड़ियों की तरह जलाकर महफ़िल को संवारा करते थे, खूंख़ार जानवरों से कुश्ती कराते और उसके हारकर मरने की हालत को बड़े शौक़ और दिलचस्पी से देखते थे और ये काम लोगों की भीड़ एकत्र करके स्टेडियम मे होता था, और दूसरी सामान–ए–ऐश व सल्तनत रखने वाले अपने लिये ऐसी नेमतें और लज़्ज़तें जमा करने के आदी होते कि उनकी सोच से आदमी हैरान रह जाए। बादशाह के ताज की क़ीमत और उसके दरबारियों की पगड़ी की कीमतें हैरान करने वाली होती थीं। और उनके बिना वो अपने को इज़्ज़त वाला नही समझते थे। खाने पकाने और गाने बजाने वालों की एक बड़ी संख्या होती थी।

औरत को केवल ऐश का साधन समझा जाता था, और उसकी ख़ातिर और इज़्ज़त केवल इसी स्तर पर होती थी। इसके अतिरिक्त भी उसको मर्दों के मुक़ाबले में कम और अप्रिय समझा जाता था। वो अपने मां बाप के घर में भाइयों के मुक़ाबले में कमतर समझी जाती, उसको मां बाप के साथ भाइयों की भी ख़िदमत करना आवश्यक होता, उनकी तरह उच्च स्थान नही दिया जाता था और उसका पैदा होना अपशगुन और एक मुसीबत समझा जाता। शादी के बाद उसका संबंध अपने मां बाप के घर से ख़त्म हो जाता, मीरास में भी उसको कोई हिस्सा नही मिलता, वो हक़ केवल भाइयों का होता, पति के मर जाने के बाद उसकी मिट्टी और भी पलीद होती मैके से संबंध तो समाप्त था, अब अपने पति के घर में केवल सेवक और नौकरानी की हैसियत में रहना होता।

हुज़ूर स0अ0 तशरीफ़ लाये तो आपने ग़ुलामों और औरतों दोनो को उनका इन्सानी हक़ दिलाया, और उनको इसी तरह इज़्ज़तदार और हक़दार इन्सान क़रार दिया जिस प्रकार मानव के दूसरे वर्ग हैं। आप स0अ0 ने साफ़ ऐलान कर दिया कि देखो तुम सब एक इन्सान आदम की औलाद हो, तुम सब बराबर हो, गोरे हो या काले, अरब हों या ग़ैर अरब, कोई किसी से बड़ा छोटा नही, हां नेकी और ख़ुदा परस्ती के आधार पर आदमी बड़ा हो सकता है। फिर आप स0अ0 ने इस पर अमल करवाया और ख़ुद भी किया और दुनिया को दिखा दिया कि इन्सानों की आपस की बराबरी कैसे होती है। ईरान के सलमान फ़ारसी रज़ि0, अफ़्रीक़ा के बिलाल हब्शी रज़ि0, रोम के सुहैब रोमी रज़ि0 को अपने साथ इस प्रकार रखा कि जैसे अपने खानदान के लोगों को रखते थे। अपने ग़ुलाम ज़ैद बिन हारिसा रज़ि0 को आज़ाद करके अपने बेटे की तरह रखा, यहां तक कि लोग उनको आप स0अ0 का मुंह बोला बेटा कहने लगे, फिर अपनी फ़ूफ़ी जाद बहन से उनका निकाह कराकर लोगों को हैरान कर दिया, औरत के हक़ को अदा करने का सख़्त हुक्म दिया, उनका मीरास का हक़ भी रखा, शादी हो जाने के बाद भी उसके मां बाप को उसकी फ़िक्र और ख़्याल का हुक्म दिया, और शौहर को अपनी बीवी का अपनी सतह के अनुसार जीवन के साधन उपलब्ध कराने का आदेश दिया, और निबाह न होने पर दोनो के अलगाव की व्यवस्था फ़रमायी। दौलत को संतुलन और इन्साफ़ के साथ खर्च करने का आदेश दिया, कंजूसी से भी मना किया, और बहुत अधिक ख़र्च करने से भी रोका, दौलतमन्दों पर ग़रीबों की मदद और हमदर्दी ज़रूरी क़रार दिया बल्कि उनकी दौलत में उनका हक़ मुकरर कर दिया, किसी का माल नाहक़ लेने, किसी की इज़्ज़त को नुकसान पहुंचाने, किसी की जान को बिलावजह लेने को हराम क़रार दिया, हक़तल्फ़ी या बिलावजह जान लेने पर बदले की इजाज़त दी, लेकिन इस इन्तक़ाम में हक़ व इन्साफ़ से अधिकता करने को हराम क़रार दिया।

और इन बातों का केवल हुक्म ही नही दिया बल्कि उन पर अमल करने वाला पूरा समाज तैयार किया। और इन्ही उसूलों पर अमल करने की आदत डाली कि आप स0अ0 के मानने वालों की ज़िन्दगियों में भी उन पर पूरा अमल करने के अजीब–अजीब नमूने सामने आये कि हज़रत अबूबक्र रज़ि0 ने जब जिहाद के लिये फ़ौज भेजी तो हुक्म दिया कि दुश्मन की इबादतगाहों में इबादत करने वालों को बिल्कुल न छेड़ा जाए, किसी इलाक़े पर फ़ौज केवल उस समय चढ़ाई जाए जब उनसे इस्लामी उसूलों के अनुसार बात करने के बाद संधि होने से मायूसी हो जाए, और जो इलाके जीते जाएं वहां के लोगों की किसी चीज़ को बग़ैर उसकी क़ीमत अदा किये हुए न लिया जाए और किसी को अपने मज़हब के छोड़ने पर मजबूर न किया जाए।

हज़रत उमर रज़ि0 को बैतुलमुकद्दस के शासकों ने वहां की हुकूमत सुपुर्द कर देने के लिये बुलाया तो आप जिस सवारी पर गये उस पर एक ही आदमी बैठ सकता था, आप के साथ आपका ग़ुलाम था, आपने अपने और उसके बीच बारी तय कर ली कि कुछ दूर आप बैठते वो पैदल चलता, फिर वो बैठता और आप पैदल चलते इसी तरह जब बैतुलमुकद्दस का शहर क़रीब आया तो बारी ग़ुलाम की थी, ग़ुलाम ने बहुत चाहा कि शहर में दाख़िल होते हुए आप ही सवारी पर बैठें, आप राज़ी नही हुए।

ईरानी शहंशाह की जब हार हुई और उसका हीरे जवाहरात का ताज एक मुसलमान के हाथ आया, उन्होने अपने दामन मे छुपाकर लाकर अपने अमीर के हवाले कर दिया, और अपना नाम भी नही बताया कि ये काम मैने अल्लाह के लिये किया है, वो मेरा नाम जानता है।

हुज़ूर स0अ0 ने अपनी शिक्षा व प्रशिक्षण से ऐसा समाज तैयार कराया जिसका एक–एक व्यक्ति आख़िरत के सवाब की चिन्ता करने वाला दुनिया की लज़्ज़तों से बेरग़बत था। हक़ पर जान देने वाला हक के लिये बड़ी बड़ी क़ुर्बानी से पीछे न हटने वाला, हर मामले में पूरे इन्साफ़ के साथ काम करने वाला, बेगुनाह और कमज़ोर की रिआयत करने वाला चाहे वो ग़ैर मुस्लिम हो, जानवरों तक पर रहमदिली करने वाला था। हक़ के प्रचार और इस्लाम के फैलाव में हमदर्दी और रहमदिली का रवैया रखने वाला, मां–बाप, अजीज़, पडोसी और जिस–जिस के हक़ूक़ इस्लाम मे बताये गये हैं उनके हक़ को अदा करनेवाला था।

(शेष पेज 8 पर)

बुज़ुर्गों से फ़ाएदा कैसे हासिल किया जाए?

→››› मौलाना नज़रुल हफ़ीज़ नदवी

एक महफ़िल मे हज़रत मौलाना अबुल हसन अली नदवी रह0 से सवाल किया गया कि लोग बुज़ुर्गों की ख़िदमत में हाज़िर होते हैं लेकिन इस बात से अनजान होते हैं कि हाज़िर होने के क्या आदाब हैं?उनसे कैसे लाभान्वित होना चाहिए।

हज़0 मौलाना ने फ़रमाया कि बुज़ुर्गों की ख़िदमत मे जब जांए तो अपने को ज़रूरतमन्द महसूस करें, लाभान्वित होने की नियत से जांए, सम्मान और अक़ीदत से जांए, उनके कामों को ग़ौर से देखें, उनकी नशिस्त व बर्खास्त को ग़ौर से देखें और बातचीत के उतार–चढ़ाव पर निगाह रखें कि इससे अल्लाह तआला की याद आती है। और उसके जिक्र की तरग़ीब होती है। ख़ुद कोई सवाल न करे बल्कि अगर ये देखिये कि पीर ख़ामोश है तो उसकी ख़ामोशी भी उसके लिये लाभदायक होती है। उसके दिल का असर माहौल पर पड़ता है। अगर वो कुछ कहे तो उसे ग़ौर से सुने और उस पर अमल करने की कोशिश करें।

ऐसे भी लोग होते हैं जो बुज़ुर्गों की मजलिसों में अपनी जानकारी को प्रकट करते हैं या उन बातों को छेड़ते हैं जो रोज़मर्रा की राजनीतिक बातें होती हैं और अख़बारों से मालूम हो जाती हैं। कई लोग अपनी क़ाबिलियत को बहुत अधिक प्रकट करते हैं, हालांकि बुज़ुर्गों की महफ़िल में हाज़िरी का मक़सद लाभ प्राप्त करना होना चाहिए न कि अपने व्यक्तित्व को प्रकट करना। अगर कोई सवाल करे भी तो इस नियत से कि वहां उपस्थित लोगों को इससे फ़ाएदा हो और उस सवाल का संबंध इस बुज़ुर्ग के विषय और विशेषता से हो यानि अगर कोई फ़िक़ीह हो तो उससे सियासी सवाल न करे, अगर हदीस का जानने वाला हो तो उससे शायरी की बातें न करें उस बुज़ुर्ग का मैदान और क्षेत्र जो हो उससे संबंधित सवाल करे।

बुज़ुर्गों के यहां इसका कोई महत्व नही कि उनकी बातों से कोई प्रभावित होता है या नही, वो तो वास्तविकता की बातें करते हैं चाहे कोई प्रभावित हो या न हो, हज़0 रायपूरी रह0 की महफ़िल में हमने ये देखा, खास तौर से रावलपिण्डी पाकिस्तान मे क़याम के मौक़े पर हज़0 से संबंध रखने वाले अपने फ़ौजी दोस्तों और आला अफ़सरों को लाते थे ताकि वो हज़0 से लाभ प्राप्त कर सकें। कई बार पूरी मजलिस ख़ामोशी की गुज़र जाती थी, कभी अगर हम लोगों मे से कोई सवाल करता तो उसको हम ही मे से किसी आलिम की ओर भेज देते। हज़0 रह0 को इसकी कोई परवाह नही होती कि कोई अक़ीदत वाला हुआ या नही, और वो दोबारा आता है या नही। हज़रत रायपूरी रह0 की ख़िदमत में बड़े–बड़े क़ायदीन और चोटी के समाजी व सियासी कार्यकर्ता और उलमा आते थे। जैसे मौलाना अताउल्लाह शाह बुख़ारी रह0, मौलाना हबीबुर्रहमान लुधयानवी रह0 वग़ैरह लेकिन ये सब हज़रत से लाभ प्राप्त करने की नियत से आते थे।

फ़िर हज़रत ने दिमश्क़ के एक बहुत बड़े बुज़ुर्ग शेख़ हारून की चर्चा करते हुए फ़रमाया कि क़याम–ए–दमिश्क़ के दौरान एक रोज़ उनकी महफ़िल मे हाज़िरी की नियत से निकला, जब वहां हाज़िर हुआ तो देखा कि एक बुज़ुर्ग बैठे हुए हैं और उनके चारों तरफ़ खुशहाल वर्ग के लोग जिनका संबंध विभिन्न वर्गों से था उपस्थित हैं। सब बातें कर रहे हैं, वो बुज़ुर्ग ख़ामोश हैं, किसी बात पर वो कभी मुस्करा देते हैं। हम जब हाज़िर हुए तो किसी ने हमारा परिचय करवाया, उन्होने कुछ कहने की फ़रमाइश की, हम ने कहा कि हम तो सुनने के लिये और लाभ प्राप्त करने की नियत से हाज़िर हुए हैं। लेकिन जब उन्होने ज़ोर दिया तो हम ने एक कहानी से अपनी बात शुरू की जो हमने कलीला दिमना में पढ़ी थी, हमने कहा कि आपको एक कहानी सुनाता हूं, "एक शख़्स को कहीं से एक क़ीमती मोती हाथ आ गया, किसी ने उसको बताया कि अगर मोतियों का माहिर इसमें सुराख़ कर दे तो इसकी क़ीमत बहुत ज़्यादा बढ़ जाएगी, इसलिये उस माहिर को लाया गया, मोती का मालिक बड़ा बातूनी था, उसने मोती के सुराख़ करने वाले से पूछा कि तुमको इसके अलावा और कौन–कौन से काम आते हैं? उसने कई काम गिनाए। जब उससे पूछा गया कि तुमको गाना भी आता है?तो उसने कहाः हां, उसने गाने की फ़रमाइश की, और शाम तक गाना सुनता रहा, शाम के समय उसने अपनी मज़दूरी मांगी तो मालिक ने कहा मज़दूरी कैसी? तुमने तो अस्ल काम किया ही नही! उसने जवाब में कहा कि अस्ल तो वक़्त की क़ीमत है, हमसे बजाए मोतियों मे सुराख़ करने के आपने गाना सुना; इसलिये हमारी फ़ीस तो देनी होगी! इसलिये वो फ़ीस दी गयी। ये कहानी सुनाकर हमने कहा कि हमारा भी हाल कहीं ऐसा न हो जाए कि हम इस मक़सद से आयें हैं कि बुज़ुर्ग से लाभ प्राप्त करें लेकिन ख़ुद अपनी ही सुनाते रहें, ऐसा न हो कि अल्लाह के यहां पूछा जाए कि तुम लोग बुज़ुर्गों से लाभ प्राप्त करने के लिये गये थे और अपनी ही सुनाते रहे!!

हिदायत की किताब ...

पेज 1 का शेष

तमाम इन्सानों को सम्बोधित करके यही वास्तविकता याद दिलायी जा रही है कि जिस माबूद ने तुमको भी पैदा किया और तुमसे पहले वालों को भी पैदा किया, वही बन्दगी के लायक़ है, केवल उसी की इबादत की जाए, उसी के आगे सर झुकाया जाए, उसी से मांगा जाए, उसकी मिसाल साधारण बादशाहों की तरह नही कि उसने अपने मददगार और अपने वज़ीर बना लिये हों, वो अकेला सब कुछ करता है। सब कुछ उसी के हाथ में है तो बस उसी को आवश्यकता की पूर्ति करने वाला समझा जाए।

बन्दगी और तारीफ़ से तक़वा की शान पैदा होती है और तक़वा कुरआन मजीद को समझने के दरवाज़ों को खोलता है। यही (हुदल्लिलमुत्तक़ीन) का राज़ है; जो जितना अधिक लिहाज़ करेगा, उतना ही वो मानगा, जबकि तक़वा के स्तर है। उसकी पहली मन्ज़िल शिर्क से बचना है। अमली तौर पर इस "किताब–ए–हिदायत" से हिदायत का आग़ाज उसी समय होता है जब एक इन्सान अपने ख़ालिक़ व मालिक के साथ किसी दूसरे को शरीक न करे, ये तौहीद जितनी ताक़तवर होती जाती है, अल्लाह की ज़ात पर यक़ीन जितना बढ़ता जाता है, हिदायत के दरवाज़े उतने ही खुलते जाते हैं।

हज़रत मुहम्मद ﷺ का दावती मिज़ाज

—››› बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

हज़रात अम्बिया कराम अलै0 का सबसे बड़ा मिशन अल्लाह की दावत है। इसी में उनकी जिन्दगियां गुज़री हैं, उनके आने का मक़सद ही यही होता है कि अल्लाह के बन्दो को अल्लाह से जोड़ा जाए और उनको सही रास्ता बताया जाए। हज़रत इब्राहीम अलै0 ने अपनी औलाद के लिये जिस नबी की दुआ की, उसके बारे मे यही फ़रमाया किः (अनुवादः ऐ हमारे परवरदिगार! उन्ही मे से एक रसूल भेज जो उनको तेरी आयतें पढ़कर सुनाए, और उन्हे किताब और हिकमत की शिक्षा दे, और उनके दिलों को साफ करे) अतः अल्लाह तआला ने दुआ कुबूल फ़रमाई और आख़िरी नबी हज़रत मुहम्मद स0अ0 को भेजा।

हर नबी की ये विशेषता कुरआन मजीद में बयान की गयी है कि उसने अपनी दावत को बिल्कुल शुद्ध रखा है और क़ौम के सामने उसको स्पष्ट भी किया है। लगभग हर नबी के बारे में उनकी ज़बानी कुरआन मजीद में ये शब्द मौजूद हैंः (अनुवादः मैं तुमसे कोई उजरत नही मांगता मेरी उजरत तो अल्लाह रब्बुलआलमीन के ज़िम्मे है)

मुहम्मद स0अ0 की ज़ात कमालों का संग्रह है। चूंकि आप स0अ0 क़यामत तक के लिये आये हैं और पूरी दुनिया के लिये हैं इसलिये आपकी दावत में कमालों की विशेषता पूरी तरह से मौजूद हैं। और आप स0अ0 के दावत के तरीक़े को अपनाने वालों की ज़िम्मेदारी है कि वो उन विशेषताओं को भी मुमकिन हद तक अपनाने की कोशिश करें।

इख़लास और सब्र

ये दीन की दावत की बुनियाद है, दावत के काम में इससे रूह और ज़िन्दगी पैदा होती है। आप स0अ0 को ख़िताब करके कुरआन मजीद में कहा गयाः (अनुवादः फ़रमा दीजिए कि मेरी नमाज़ और मेरी इबादत, मेरा जीना और मरना सब अल्लाह के लिये है जो जहानों का पालनहार है)

इख़लास और सब्र का उद्गम आप स0अ0 की ज़ात है। आप स0अ0 की दावत का मक़सद ही अल्लाह के बन्दों को अल्लाह से जोड़ना था। भेजे जाने के शुरूआत में जब आप स0अ0 ने दावत का काम शुरू किया तो इस काम से आप स0अ0 को हटाने की हर मुमकिन कोशिश की गयी लेकिन आप स0अ0 इस काम मे लगे रहे, हर प्रकार की पेशकश भी आप स0अ0 को की गयी, तरह–तरह से सताया गया यहां तक अबू तालिब जो आपके हमदर्द और मुहब्बत रखने वाले चचा थे उनके पास लोग गये और उनको आमादा किया कि वो आप स0अ0 को इस दावत के काम से रोकें। उन्होने हुज़ूर स0अ0 को बुलाया और कहा कि ऐ मेरे प्यारे इतना बोझ न डालो कि उठा न सकूं। हुज़ूर स0अ0 की आंखों मे आंसू आ गये, और आप स0अ0 ने फ़रमाया "ऐ चचा जान अगर आप मेरे एक हाथ में सूरज और दूसरे में चांद रख दें तो भी मैं इस काम को नही छोड़ सकता यहां तक कि अल्लाह तआला ही फ़ैसला फ़रमा दे।"

ये काम अल्लाह का दिया हुआ था, आप स0अ0 हर तरह से तकलीफ़ें उठाते रहे लेकिन एक क्षण के लिये भी आप स0अ0 ने उसमें कमी नही की। फिर जब जांनिसारों की एक जमाअत तैयार हो गयी उस समय भी आप स0अ0 ने एक लम्हे के लिये भी फ़ाएदा नही उठाया।

सूरज ग्रहण के बारे लोगों का विचार ये था कि ये किसी बड़े हादसे के समय होता है, जब आप स0अ0 के साहबज़ादे की वफ़ात हुई तो सूरज ग्रहण हुआ। लोगो ने इसकी वजह यही बतायी, आप स0अ0 ने सहाबा को मस्जिद में जमा किया और ऐलान फ़रमा दिया कि ये सूरज और चांद अल्लाह की निशानियां हैं, किसी की मौत और ज़िन्दगी से इसमें ग्रहण नही होता।

दर्द व फ़िक्र

उम्मत के एक–एक व्यक्ति के लिये दर्द व फ़िक्र आंहज़रत स0अ0 की दावत की एक आधारभूत विशेषता थी, आप स0अ0 की तड़प का ज़िक्र खुद अल्लाह तआला ने कुरआन मजीद में किया हैः (अनुवादः लगता है कि अगर लोग ईमान न लाये तो आप अपने को हलाकत में डाल लेंगे)

मक्का मुकर्रमा में लगातार आप स0अ0 दावत देते रहे। फिर इस उम्मीद से ताएफ़ तशरीफ़ ले गये कि शायद वहां लोगों मे ईमान पैदा हो लेकिन उसके विपरीत वहां के लोगों ने आंहज़रत स0अ0 के साथ बदतरीन सुलूक किया। आप स0अ0 लहूलुहान हो गये, ख़ून बह रहा था इसी हाल में फ़रिश्ता आया और उसने कहा कि अगर आप हुक्म दें तो ताएफ़ के दोनो तरफ़ जो पहाड़ हैं उनको मिला दिया जाए और पूरी बस्ती पिस कर रह जाए। आप स0अ0 ने इसे पसन्द न फ़रमाया और इरशाद हुआ कि अगर ये ईमान नही लाते तो हमें उम्मीद है कि उनकी आने वाली नस्लें ईमान लायेंगी।

उम्मत के लिये आप स0अ0 के दर्द व फ़िक्र की क्या स्थिति थी आंहज़रत ने इसकी एक मिसाल दी है, एक व्यक्ति आग सुलगाता है, जब आग खूब रोशन हो गयी तो परवाने आकर उसपर गिरने लगे। आप स0अ0 ने फ़रमाया मेरी तुम्हारी मिसाल ऐसी ही है, तुम आग में गिरे पड़ रहे हो मैं तुम्हें कमर से पकड़–पकड़ कर रोकता हूं, मगर तुम मेरे हाथों से फिसले जाते हो।

हर वर्ग के लिये

जब आप स0अ0 को नबूवत मिली और पहली वही आयी तो आप स0अ0 पर अजीब कैफ़ियत तारी हुई, आप घर तशरीफ़ लाये और हज़रत ख़दीजा रज़ि0 से फ़रमायाः जम्मिलूनी, जम्मिलूनी, (मुझे उढ़ा दो, मुझे उढ़ा दो) फिर तब्लीग़ का हुक्म आ गया हुक्म हुआ की पहले रिश्तेदारों को डराया जाए, आप स0अ0 ने खाने की व्यवस्था की और सभी अज़ीज़ो व रिश्तेदारों को बुलाया, खाने के बाद आप स0अ0 ने तौहीद की दावत पेश की बात सभी ने सुन ली, कुछ न कहा, बदबख़्त अबूलहब बुरा भला कहता हुआ उठ गया। अब समय आ गया कि साधारण लोगों को दावत दी जाए, आप स0अ0 कोई अवसर ख़ाली नही जाने देते, उनके बाज़ारों में जाते, और कहतेः "ऐ लोगो ला इलाहा इल्लल्लाह को मान लो कामयाब हो जाओगे" हज के अवसर पर जो विभिन्न क्षेत्रों के लोग आते उनको आप स0अ0 दावत पेश फ़रमाते, मदीना मुनव्वरा में इस्लाम का बीज वहीं से पड़ा, पहले चक्र में कुछ लोग और फिर बाद में बड़ी संख्या में लोग मुसलमान हुए, मदीना मुनव्वरा हिजरत के बाद भी दावत का सिलसिला जारी रहा यद्यपि युद्धों के लगातार होने से आप को दूसरे देशों में दावत पहुंचाने का मौक़ा नही मिल सका। जब सुलह हुदैबिया हुई तो इस सुलह की मुद्दत यद्यपि दो ही साल स्थिर रह सकी लेकिन आप स0अ0 ने हर वर्ग को दीन की दावत दी, लोग आते थे और आप स0अ0 के अख़लाक़ व किरदार और सच्चाई और अमानतदारी से प्रभावित होते, उस समय के शुद्ध इस्लामी समाज से प्रभावित होते और इस तरह इन दो सालों में बहुत तेज़ी के साथ इस्लाम फैला। इन्ही दिनों में आप स0अ0 ने दुनिया के बड़े–बड़े शासकों को दावत के ख़त भी भेजे और उसके लिये मोहर बनवायी। (शेष पेज 6 पर)

मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी

फ़तवा जारी करने के आदाब

1– फ़तवा स्पष्ट होना चाहिए जिससे प्रश्नकर्ता के उठाये हुए और सभी संभव शक दूर हो जांए।

2– सवाल को शुरू से लेकर आख़िर तक पढ़ना चाहिए, इसलिये कि कभी अस्ल बात बीच में या आख़िर में होती है। एक बार एक सवाल करने वाला एक बड़े आलिम के पास आया, उसमें शुरू और आखिर में कुछ जाएज़ चीज़ों के बारे में सवाल था, बीच में बैंक के ब्याज और लाइफ़ इन्शयोरेन्स के बारे में सवाल था, उसका जवाब केवल शुरूआत और आख़िर को देखकर दे दिया गया था कि ये सभी चीज़ें जाएज़ हैं। फिर क्या था?हंगामा मच गया, फ़तवे की फ़ोटोकापियां बांटी गयीं, और बड़ी मुश्किल से फ़ितना ख़त्म किया जा सका। अगर इसका ख़्याल रखा जाता तो ये फ़ितना पैदा न होता।

3– अगर जवाब में कुछ शक है तो दूसरे ज्ञानी से राय लेकर जवाब दे, या यक़ीन से जवाब देने के बजाए उससे बता दे या लिख दे कि इस मसले में मुझे पूरा इत्मिनान नही है। अतः दूसरे योग्य लोगों से भी राय ले ली जाए। आख़िरी दौर मे हज़रत थानवी रह0 के यहां ये चीज़ें कसरत से मिलती हैं।

4– इस ज़माने का मिज़ाज ये है कि फ़तवा लिखने वाले के हवाले से लोगों को पूरा भरोसा और दिली सुकून नही होता है। इस मिज़ाज की रिआयत करते हुए अगर मुमकिन हो तो फ़तवा लिखने वालो के अतिरिक्त किताब व सुन्नत से भी हवाले दर्ज करे।

5– बेहतर ये है कि फ़तवा देने से या लिखने से पहले अऊज़ बिल्लाह व बिस्मिल्लाह पढ़ ले, फ़िर अल्लाह तआला की हम्द व सना के बाद रसूलल्लाह स0अ0 पर दरूद पढ़े फिर ﴿ربِّ اشرح لي صدري ويسر لي أمري واحلل عقدةً من لساني يفقهوا قولي﴾ पढ़े, उसके बाद जवाब लिखे। इमाम मालिक रह0 का नियम था कि वो फ़तवा देने से पहले "لا حول ولا قوة الّا بالله" पढ़ते थे।

6– मुनासिब ये है कि "الجواب وبالله التوفيق" से फ़तवे की शुरूआत करे, और "والله أعلم، والله الموفق، وبالله التوفيق" इत्यादि शब्दों पर समाप्त हो। और आख़िर मे ऐसी स्पष्टता के साथ अपना नाम लिखे कि पढ़ने में कठिनाई न हो।

7– फ़ुज़ूल के सवालो को करने से क़ुरआन और हदीस में मना किया गया है।

अतः अगर मुफ़्ती के पास इस तरह के सवालात आते हैं और वो महसूस करता है कि इसके जवाब से फ़ितना भड़क उठेगा, या इससे दीन व दुनिया का कोई फ़ाएदा नही हे तो उसको इस प्रकार के सवालों से किनारा करके फ़तवा देने में मोहतात अन्दाज़ अपनाना चाहिए। मौलाना तक़ी उस्मानी साहब अपने वालिद मुफ़्ती शफ़ी साहब रह0 की बात नक़ल करते हुए लिखते हैः

"सबसे पहले मुफ़्ती को ये देखना पड़ता है कि सवाल करने वाले का सवाल जवाब देने के लायक़ है या नही?और कई बार सवाल के अन्दाज़ से ये बात पता चल जाती है कि इसका मक़सद अमल करना या अमल में अधिकता करना नही, बल्कि अपने किसी विरोधी को गिराना है, या हालात ऐसे हैं कि इस सवाल के जवाब से फ़ितना पैदा हो सकता है; ऐसी हालत में सवाल करने वाले के सवाल के जवाब से किनारा करना मुनासिब होता है, जैसः एक बार सवाल आया कि हमारी मस्जिद के इमाम साहब फ़लां–फ़लां आदाब का ख़्याल नही रखते, क्या उन्हे ऐसा करना चाहिए कि नही?सवाल किसी नमाज़ी की ओर से था, और इसके अन्दाज़ से हज़रत वालिद साहब रह0 को ये गुमान हो गया कि इस सवाल करने वाले का उद्देश्य इमाम साहब को हक़ की दावत देना फ़हमाइश करना नही बल्कि उनकी तहक़ीर और उनके कई एहतियात के ख़िलाफ़ के कामों की तशहीर करना है, अतः हज़रत वालिदसाहब ने इसके जवाब में तहरीर फ़रमायाः ये सवाल तो ख़ुद इमाम साहब के पूछने के हैं, उनसे कहिये कि वो लिखकर या ज़बानी मालूम कर लें। और इस प्रकार ये संभव फ़ितना समाप्त हो गया।"

इसी प्रकार हज़रत वालिद साहब रह0 को इसका बड़ा इहतिमाम था कि जिनके सवालों पर दुनिया व आख़िरत का कोई अमली फ़ाएदा आधारित न हो उनकी हिम्मत तोड़ी जाए। हज़रत वालिद साहब ऐसे सवालों के जवाब में फ़तवा देने के बजाए ऐसी नसीहत फ़रमाते थे जिससे अमल का ध्यान और आख़िरत की फ़िक्र पैदा हो, जैसे एक बार किसी ने सवाल कियाः यज़ीद की मग़फ़िरत होगी या नही?आपने जवाब दियाः यज़ीद से पहले अपनी मग़फ़िरत की चिन्ता करनी चाहिए। एक साहब ने एक मशहूर शख़्सियत की कुछ बातें लिखकर सवाल किया कि क्या वो उन कामों की वजह से फ़ासिक़ हो गये?आपने फ़रमायाः मुझे अभी तक अपने फ़िस्क़ के संबंध से संतोष नही हुआ, मैं किसी दूसरे के बारे में क्या फैसला करूं?..........(व्यर्थ के सवालों के जवाब में) कई बार केवल इतना जवाब देते थे कि नबी करीम स0अ0 का इरशाद हैः (इन्सान के अच्छे मुसलमान बनने का हिस्सा ये भी है कि व्यर्थ की बातों को छोड़ दे)

8– कई इस्तलाहें पहले लोग आसानी से समझ लेते थे, अब पूरे–पूरे मुहल्ले मे उनका समझने वाला कोई नही मिलता, इसी तरह की चीज़ों को इसी आसान ज़बान में लिखना चाहिए कि आजकल के कम से कम पढ़े लिखे लोग समझ सकें। जैसे विरासत से संबंधी सवाल के जवाब में आम रिवाज ऐसे वाक्य लिखने का है जिसका पूरा अर्थ उर्दू में पी एच डी करने वाला और कई बार कम योग्यता वाला मदरसे का फ़ारिग़ छात्र भी पूरी तरह बयान नही कर सकता, अतः इस प्रकार के वाक्यों को स्पष्ट रूप से लिखने की आवश्यकता है।

9– फ़तवा लम्बा हो तो फ़तवे के शुरू या आख़ीर में कुछ वाक्यों में उसका खुलासा भी लिख देना चाहिए; इसलिये कि लम्बी बहस की भूल भुलैय्या में भटक कर कई बार क़ारी अस्ल जवाब तक नही पहुंच पाता।

इसी प्रकार के और भी कई ज़ाब्ते और आदाब हैं जिनकी तफ़सील उसूल और इफ़ता की किताबों में देखी जा सकती है, अगर इन उसूलों का ख़्याल रखा जाए तो मीडिया को प्रोपगण्डे का मौक़ा ही नही मिल पायेगा, और अगर साथ ही उन प्रचार के साधनों को अपने क़ाबू में कर लिया जाए, और धीरे–धीरे उनको सही मालूमात से भर दिया जाए तो यही प्रचार के साधन इस्लाम के प्रचार का बेहतरीन ज़रिया बन जांएगे। अल्लाह तआला इसके असबाब पैदा फ़रमाये।

शिर्क की वास्तविकता

→››› मुहम्मद हसन नदवी

पूरी मानवता पर सबसे बड़ा एहसान तौहीद के अक़ीदे का है क्योंकि इन्सान के सारे कामों की स्वीकृति का आधार इसी पर है, और तौहीद के अक़ीदे पर पानी फेर देने वाली चीज़ शिर्क का काम है। इसलिये कि इसकी नहूसत से इन्सान का अच्छे से अच्छा काम अल्लाह की निगाह में अस्वीकृत हो जाता है।

शिर्क का शाब्दिक अर्थ शरीक करने का और मिलाने का है, यानि एक से अधिक खुदा मानना और उनको इबादत के योग्य समझना, और अल्लाह की विशेष विशेषताओं को अल्लाह के अलावा किसी और से जोड़ना, जैसेः ये समझना कि मौत व जिन्दगी का मालिक अल्लाह के अलावा कोई और भी हो सकता है, पानी कोई और बरसा सकता है, रोज़ी कोई और देता है, ज़रूरत पूरी करने वाला और मुश्किल दूर करने वाला कोई और है।

शिर्क ऐसा बदतरीन गुनाह है कि अगर इन्सान को तौबा के बग़ैर मौत आ गयी तो उसका ठिकाना हमेशा के लिये जहन्नम होगा; अल्लाह का इरशाद हैः (याद रखो जो व्यक्ति अल्लाह के साथ शिर्क करेगा, अल्लाह ने उस पर जन्नत हराम कर दी है और उसका ठिकाना दोज़ख़ है) एक दूसरी जगह अल्लाह ने साफ़–साफ़ फ़रमा दिया है कि अल्लाह तआला शिर्क को माफ़ नही करेगा और उसके अतिरिक्त किसी गुनाह को चाहे तो माफ़ कर दे। एक जगह पर अल्लाह ने नबियों की बात करने के बाद फ़रमाया कि ये पाक ज़ातें जिनको हमने तौहीद की दावत के फ़र्ज़ को अदा करने की वजह से तमाम जहानों मे फ़ज़ीलत दी थी, अगर फ़र्ज़ किया जाए कि वो भी शिर्क मे लिप्त हो जाते तो उनके काम बेकार हो जाते और किया धरा भी बेकार हो जाता।

ऐसा इस वजह से है कि शिर्क इन्सानी अक़्ल व फ़ितरत के विरुद्ध एक घटिया अक़ीदा है, और मानव योग्यताओं को मिट्टी में मिला देने वाला काम है। किताब व सुन्नत की शिक्षा के मुकाबले मे एक बग़ावत है और अक़्ली आधार पर भी इसके सही होने की कोई दलील नही है। बल्कि ये अल्लाह की ग़ैरत को जोश दिलाने वाली चीज़ है, इससे इन्सान की वो हैसियत व शराफ़त ख़त्म हो जाती है जो उसे ज़मीन की ख़िलाफ़त के सदक़े मे मिली है। इसलिये कि जब इन्सान अल्लाह की मख़लूक़ को अपना माबूद और ज़रूरत पूरी करने वाला बनाता है तो वो अपनी इज़्ज़त व शराफ़त को घटाता है। क्योंकि अल्लाह ने सारे जहान की मख़लूक़ और कायनात की सारी चीज़ों को उस खलीफ़ा के फ़ाएदे के लिये पैदा किया है। और ये उल्टा उनके सामने कटोरा लेकर खड़ा है!! अल्लाह ने शिर्क की इस सतहियत को अपने कलाम मे यूं बयान फ़रमायाः (ऐ लोगो! एक मिसाल दी जाती है, ग़ौर से सुनो! जिन माबूदों को तुम खुदा को छोड़कर पुकारते हो वो सब मिलकर एक मक्खी भी पैदा करना चाहें तो नही कर सकते बल्कि मक्खी अगर उनसे कोई चीज़ छीन ले तो वो उसे छुड़ा भी नही सकते, मदद चाहने वाले भी कमज़ोर! जिनसे मदद चाही जाती है वो भी कमज़ोर!)

हक़ीक़त ये है कि शिर्क कभी भी इन्सानी अक़्ल व ज़हन को सन्तुष्ट करने वाली चीज़ नही है। कोई भी मुशरिक अपने अक़ीदा के ग़लत होने पर ग़ौर करे तो उसका ग़लत होना उसके दिलो दिमाग़ पर स्पष्ट हो जाएगा; क्योंकि शिर्क का सारा मामला वहम परस्ती और बाप व दादा के रस्मो रिवाज पर चलता है।

शिर्क की बदतरीन शक्ल में अल्लाह के लिये बीवियों और बेटा–बेटियों के अक़ीदे को भी शामिल किया गया है। सूरह मरियम की आयत में अल्लाह ने इस अक़ीदे के संबंध से अपने सख़्त गुस्से को प्रकट किया है; आयत का तर्जुमा ये हैः "वो कहते हैं कि रहमान ने किसी को बेटा बनाया, सख़्त बेहूदा बात है जो तुम गढ़ लाये हो! क़रीब है कि आसमान फट पड़े, ज़मीन फट जाए और पहाड़ गिर जाएं इस बात पर कि लोगों ने रहमान के लिये औलाद होने का दावा किया है, रहमान की ये शान नही कि किसी को बेटा बनाए।"

शिर्क की कमतर शक्ल "शिर्क ख़फ़ी" यानि पोशीदा शिर्क कही जाती है, ये इरादों और नियतों का शिर्क होता है जैसा कि रियाकारी और शोहरत इत्यादि, अल्लामा इब्ने क़ैय्यीम फ़रमाते हैं कि इरादों और नियतों का शिर्क तो ऐसा समुन्द्र है जिसका कोई किनारा नही, कम ही लोग इस से बच पाते हैं अल्लाह हम सब की हर किस्म के शिर्क से हिफ़ाज़त फ़रमाये और ईमान पर ख़ात्मा फ़रमाये, आमीन या रब्बलआलमीन!

हज़रत मुहम्मद स0अ0 का दावती मिज़ाज

पेज 4 का शेष

बेहतर ज़बान व तरीक़े का प्रयोग

अरबों को अपनी ज़बान पर नाज़ था और वही बात उन पर असर डालती थी जिसमें ज़बान उच्चस्तर की हो। अल्लाह ने इसलिये आप स0अ0 को क़ुरआन करीम का मोजज़ा अता फ़रमाया, और उसमें फ़रमा दियाः (अनुवादः ये बहुत साफ़ अरबी ज़बान मे है) इसकी ऐजाज़ बयानी को हर एक ने स्वीकार किया, दुश्मनों को खुली दावत दी गयी कि इस जैसी एक छोटी सी सूरह ही बना लाओ लेकिन वो नही बना सके। सुनते थे और सर धुनते थे, सब कुछ कहते थे, लेकिन क़ुरआन मजीद की ऐजाज़ बयानी के आगे उनके सर झुके हुए थे, हुज़ूर स0अ0 को भी अल्लाह तआला ने ऐजाज़ बयानी से नवाज़ा था, इसलिये अरबी अदब के आला तरीन नमूनों में क़ुरआन मजीद के बाद हदीस–ए–नबवी स0अ0 का दर्जा है, खुद आप स0अ0 ने फ़रमाया किः (बयान की क़ूवत में एक जादू होता है) जबान के प्रभाव का महत्व सबको स्वीकार था, आप स0अ0 ने बहुत आला ज़बान इस्तेमाल फ़रमायी, और इसको भी दावत का एक प्रभावित ढंग बताया।

हज़रत हस्सान रज़ि0 को शायर–ए–रसूलल्लाह स0अ0 कहा जाता है। आप स0अ0 कभी–कभी मुशरीकीन मक्का का जवाब देने के लिये मस्जिद नबवी में मेम्बर पर अश्आर पढ़वाते, इरशाद होता कि ये उन दुश्मनों के लिये तीरों से ज्यादा असरदार हैं।

मुहम्मद नफ़ीस ख़ाँ नदवी

WikiLeaks ... कुछ तो है जो पर्दे में है!

ढ़ाई लाख खुफ़िया अमरीकी दस्तावेज़ छापने वाली कम्पनी विकीलीक्स (Wikileaks) के संस्थापक जूलियन असांजे (Julian Assange) ने अमरीका के ब्रिटिश राजदूत लुइस ससमन (Louis Susman) को 26 नवंम्बर को संपर्क कर के कहा कि वो इन खुफ़िया दस्तावेज़ों को छापने से पहले प्रसिद्धी दिलाना चाहते हैं ताकि इन दस्तावेज़ों मे से अगर ऐसी बातें हों जिनके छपने से कुछ लोगो को अपनी ज़िन्दगी का ख़तरा हो सकता हो तो उन पर विचार कर लिया जाए। उन्होने इस बात का भी यक़ीन दिलाया कि उनके बीच जो भी बातें होगी वो गुप्त रखी जांएगी। इस चिठ्ठी को उक्त दूत ने अमरीकी विदेश मंत्रालय के हवाले कर दिया जिसके क़ानून मंत्री ने ये राय प्रकट की कि इन दस्तावेज़ों की छपाई ग़ैरक़ानूनी है, और इससे पत्रकारो, मानवाधिकार संस्थाओं के कार्यकर्ताओं और अमरीकी शासकों और फ़ौजियों की जान को ख़तरा हो सकता है। और सबसे बढ़कर इससे दहशतगर्दी के विरुद्ध जारी अमरीकी मुहिम को अत्यधिक नुक़सान पहुंचेगा और अमरीका और उसके मित्र देशों के मध्य असमंजस उत्पन्न होगा और उनके बीच के संबंध प्रभावित होंगे। इस पर विकीलीक्स की ओर से कहा गया कि अमरीकी शासक अपने जुर्मों पर पर्दा डालने के लिये इन दस्तावेज़ो की छपाई को रुकवाना चाहते हैं। और फिर जूलियन असांजे ने ये सभी दस्तावेज़ प्रकाशित कर दिये। ये दस्तावेज़ पहले ही न्यूयार्क टाइम्स, फ्रांसीसी दैनिक एल–मोन्डे (L-Monde) ब्रिटिश अख़बार गार्जियन और प्रसिद्ध जर्मन अख़बार डर स्पीगल (Der Speigel) को उपलब्ध कर दिये गये थे।

इन दस्तावेज़ों मे अमरीकी पत्रकारों, फ़ौजी अफ़सरों और अधिकार वाले लोगों के लेखों, रिपोर्टों, सिफ़ारिशों, चर्चाओं और अधीनों को जारी किये गये आदेशों की व्याख्यांए हैं जिन्हे सरकारी राज़ समझा जाता है और उनका प्रकाशित होना संगीन अपराध घोषित कर दिया जाता है, लेकिन हर देश का क़ानून उसके नागरिकों के लिये होता है, किसी दूसरे देश का नागरिक उसका पाबन्द नही और चूंकि जूलियन असांजे आस्ट्रेलियन है इस कारण अमरीका अब तक इस सिलसिले मे उसके ख़िलाफ़ कोई कार्यवाही नही कर सका।

विकीलीक्स के अनुसार सन् 1989 ई0 में पनामा में हमले के दौरान अमरीकी फ़ौज ने पांच हज़ार प्रदर्शनकारियों को मार दिया। उनकी पीठ पर उनके हाथ बांधे और फिर उनके सर मे गोली मार दी।

सऊदी अरब, जार्डन, सीरिया, मिस्र में मौजूद अमरीकी दूतों को ये हिदायत दी गयी कि वो हमास के लीडरों पर पूरी नज़र रखें। और ज़ाहिर सी बात है कि ये जानकारियां इस्राईल को ही भेजी जांएगी।

ईराक़ से संबंधित विकीलीक्स ने 9200 पेजों का प्रकाशन किया है जिसमे अमरीका के उन जुर्मों से पर्दा उठाया गया है जो मीडिया की कवरेज से बाहर थे। इसके अनुसार ईराक़ में अमरीकी और नाटो फ़ौजों के हाथों एक लाख नौ हज़ार ईराक़ियों को क़त्ल किया गया, जिसमें 93 प्रतिशत मरने वाले आम नागरिक थे। इसके अतिरिक्त वो पन्द्रह हज़ार नागरिक ऐसे भी थे जिन्हे केवल इस कारण गोली मार दी गयी कि बग़दाद मे स्थापित अमरीकी चौकियों पर सिपाहियों ने उन्हे रोकने की कोशिश की और वो नही रुके। और जो नागरिक शक के आधार पर गिरफ़्तार किये गये थे उन्हे जिस्मानी, लैंगिक और दिमाग़ी कष्ट का निशाना बनाया गया। अपराध स्वीकार कराने के लिये उनकी हड्डियों और जिस्मों को ड्रिलिंग मशीनों से छेदा गया, जबकि औरतों को बिना उम्र का लिहाज़ किये हवस का निशाना बनाया गया, उनकी इज़्ज़तों को लूटा गया और फिर उन्हे क़त्ल कर दिया गया। इस प्रकार के और भी संगीन जुर्म है जो अमरीकी शासन की निगरानी में उसके आदेशानुसार अन्जाम दिये गये थे।

याद रहे कि युद्धबन्दियों पर शारीरिक या कोई भी प्रताड़ना जेनेवा कन्वेनशन तृतीय की धारा 130 (12 अगस्त 1949) के अन्तर्गत मना है। इस प्रकार की और प्रताड़नांए जेनेवा कन्वेनशन के इज़ाफ़ी प्रोटोकाल की धारा 11 और 85 (सन् 1977ई0) के तहत संगीन जुर्म है। जबकि इस प्रोटोकाल की धारा 86 के अन्तर्गत वो अफ़सर भी अपराधी घोषित कर दिये जांएगे जिन्हे अपने अधीनों की उन प्रताड़नाओं का ज्ञान था या उनको होना चाहिए था।

विकीलीक्स के स्वीकार के बाद पूरी दुनिया मे अमरीका की ख़तरनाक़ पालिसियां देखकर एक खलबली सी मच गयी, दुनिया भर के प्रिन्ट मीडिया और इलेक्ट्रानिक मीडिया ने इस विषय को खूब उछाला और जूलियन असांजे की हिम्मत और मानवता के भाव को दाद दी।

एक ओर अमरीका और उसके मित्र देशों से संबंधित विकीलीक्स के स्वीकार हैं जिनके सामने आने पर पूरी दुनिया में हलचल सी मच गयी लेकिन दूसरी ओर विकीलीक्स के स्वीकार इस्लामी दुनिया से संबंधित भी हैं। जो इस हद तक संगीन, निन्दनीय हैं कि अगर उनको सही मान लिया जाए तो परिणाम यही निकलेगा कि इस्लाम और मुसलमानो के दुश्मन खुद मुस्लिम शासक हैं और उन शासकों के अस्ल चेहरे बहुत ही ख़ौफ़नाक हैं और उनके हौसले और उनकी सोच सहयूनी विचार से अधिक विषाक्त है।

विकीलीक्स ने इस्लामी दुनिया से संबंधित जो स्वीकार किये हैं उनके अनुसार सऊदी अरब, जार्डन, मिस्र, बहरीन और अबू धाबी के शासक अमरीका को इस बात पर उभारते हैं कि वो ईरान पर हमला कर दे, शाह सऊदी अरब के बहुत से इस्लामी देशों के शासकों से संबंधित कठोर चर्चाए भी हैं। विशेषतयः ईरानी राष्ट्रपति महमूद अहमद निज़ाद से संबंधित जो ख़बरें हैं वो बहुत ही संवेदनशील हैं।

सब महत्वपूर्ण चर्चा ईरान के जौहरी प्रोग्राम से संबंधित है जिसमें शाह अब्दुल्लाह ने अमरीका को सुझाव दिया है कि वो ईरान पर हमला करके उसके जौहरी प्रोग्राम को तबाह कर दे।

इन दस्तावेज़ों मे पाकिस्तान से संबंधित कई महत्वपूर्ण ख़बरे भी हैं जिसमे अधिकतर का संबंध वहां के एटमी प्लान और उसके अफ़गानिस्तान और ईरान से संबंध से है। साथ मे ये भी है कि फ़ौजी जरनल परवेज़ कियानी ने देश मे सियासी संकट के हल के लिये राष्ट्रपति आसिफ़ अली ज़रदारी को उनके पद से हटाने और फिर देश से निकालने पर विचार किया था इस सिलसिले मे अमरीकी दूत एन पीटरसन से बातचीत की थी।

विकीलीक्स तुर्की के बारे मे कहता है कि अमरीका तैयब उरदगान के शासन को इसलिये नही पसन्द करता कि वो युद्ध में फिलिस्तीन की नाकाबन्दी को तोड़ने मे उसने अहम किरदार अदा किया है। और इस्राईल के जंगी जुर्मों को दुनिया के सामने पेश करने की कोशिश की है। इसके अतिरिक्त उसकी भी सराहत अमरीकी जासूस ये प्रोपगन्डा करने पर तय हैं कि तुर्की अन्दरूनी तौर पर दो धड़ों मे बंटा हुआ है। जिसमे से एक तैयब उरदगान का हामी और दूसरा उनका विरोधी है। जिससे तुर्की का भविष्य अत्यधिक ख़तरे में है।

विकीलीक्स ने इन स्वीकार के द्वारा इस्लामी दुनिया के सरबराहों के बीच जो ग़लतफ़हमियां पैदा करने की कोशिश की है उनको जबकि सरबराहों ने अपनी सूझ–बूझ और अक़्लमन्दी भरे बयानों से बज़ाहिर नाकाम बना दिया है, मगर ये सवाल अपनी जगह क़ायम है कि इन स्वीकार के पीछे (पीछे जिनका सिलसिला अभी जारी है) विकीलीक्स के उद्देश्य क्या हैं?और सबसे बड़ा सवाल ये है कि वो अमरीका जो पूरी दुनिया को अपनी मुठ्ठी में करने का दावा करता है उसके ख़ुफ़िया दस्तावेज़ विकीलीक्स तक पहुंचे कैसे? दुनिया भर की सलामती का ढ़िंढोरा पीटने वाला और विश्व रक्षा का दावा करने वाला अमरीका क्या अन्दर से इस हद तक कमज़ोर है कि जिसका जी चाहे उसके क़ीमती राज़ पर हाथ साफ़ कर दे और अमरीका उसका कुछ न कर सके? इसी प्रकार के सवाल नाइन इलेवेन के हमले के बाद भी सामने आये थे और फिर ये वास्तविकता भी दुनिया के सामने आयी कि वो पूरा ड्रामा किस प्रकार किया गया था, तो सवाल ये उठता है कि कहीं ये स्वीकार भी इसी तरह की सोची समझी साज़िश का हिस्सा तो नही जिनके पीछे यहूदी लाबी काम कर रही हो?क्योंकि इस्राईल ही वो देश है जो अमरीका के इन सभी राज़ों तक रसाई की पूरी योग्यता रखता है और जिन तक पहुंचना जूलियन असांजे जैसे बदनाम व्यक्ति के बस की बात नही। यही वजह है कि इस पूरी रिपोर्ट में इस्राईल से संबंधित कुछ भी नही कहा गया है, जबकि देश के प्रचलित क़ानून के तहत विकीलीक्स वेबसाइट को ब्लाक (BLOCK) किया जा सकता था, ऐसा अब तक नही किया गया है। इन हालात को देखते हुए ये कहना बेजा नही है कि "कुछ तो है जो पर्दे मे है।"

विकीलीक्स को गुप्त जानकारियां कहां से प्राप्त हुई?

अब तक सामने आने वाली सूचनाओं के अनुसार विकीलीक्स ने गुप्त जानकारियों का एक बड़ा हिस्सा अमरीका के रक्षा विभाग के नेटवर्क "सुपर नेट" (Super Net) से प्राप्त की हैं। रक्षा विभाग का ये नेटवर्क जिसे "सुपर नेटवर्क भी" कहा जाता है गुप्त जानकारियों के आदान प्रदान के लिये प्रयोग किया जाता है। ये नेटवर्क 1990ई0 में स्थापित किया गया था, और नाइन इलेवेन के हादसे के बाद गुप्त जानकारियों के आसानी से आदान प्रदान, और विभिन्न एजेंसियों के बीच संबंध को आसान और सम्पूर्ण करने के लिये इसमें वृहदता दी गयी, इस नेटवर्क के द्वारा इन गुप्त जानकारियों का स्थानान्तरण किया जाता है, जिनका प्रसिद्ध होना देश की सलामती के लिये ख़तरनाक हो सकता है, इस नेटवर्क को नवीनतम तकनीक के द्वारा सुरक्षित किया गया है। इससे संबंधित व्यक्तियों की पूरी निगरानी रखी जाती है। और ख़ास कमप्यूटर के द्वारा ही इसको प्रयोग किया जा सकता है। ये कमप्यूटर चौबीस घण्टे निगरानी मे रहता है, इसके अलावा वो पहले से ही तय इन्टरनेट से ही इसको जोड़ा जा सकता है, किसी आम इन्टरनेट से इसका प्रयोग नामुमकिन है, इसके अतिरिक्त इस कमप्यूटर की डिवाइज़ (Device) को भी गुप्त रखा जाता है। जिसकी जानकारी विशेष व्यक्तियों को ही होती है।

मुबारक महीना और नबी–ए–रहमत

पेज 2 का शेष

इस तरह दुनिया ने अख़लाक़ व इन्सानियत और भाईचारे के वातावरण का एक ऐसा नमूना देखा जिसकी मिसाल इससे पहले इतिहास मे नही मिलती, इससे पहले पूरी मानवता ज़ुल्म और नाइंसाफ़ी और ज़लालत और इज़्ज़त व ज़िल्लत के छोटे पैमानों के ऐसे मुक़ाम पर पहुंच गयी थी कि उसके बाद मानवता ख़ुद अपने हाथों से आत्महत्या कर लेती।

दूसरी ओर दुनिया ने इल्म में ऐसी उन्नति कर ली थी, ताक़त व राहत और तरक़्क़ी के साधन ऐसे हासिल कर लिये थे कि सभ्यता व संस्कृति की चमक दमक निगाह को हैरत में डाल देती थी, एक ओर सासानी साम्राज्य था, दूसरी ओर रोमी साम्राज्य था। और दुनिया उन की ताक़त व तरक़्क़ी को देखकर हैरत में थी लेकिन मानवता ज़ुल्म व हक़तल्फ़ी, संगदिली और ज़िल्लत, ऊंच नीच के ज़ालिमाना तरीक़े के नीचे सिसक रही थी और हुकूमत करने वालों, ऐश व अय्याशी के मतवालों, इल्म व हुनर के माहिरों और फ़लसफ़ा व हुकूमत और धर्म के पेशवाओं को इसका एहसास न था। और एहसास था तो वो अपने को इसकी तब्दीली से आजिज़ महसूस करते थे और हालात के साथ ख़ुद भी ये रहे थे कि अल्लाह तआला को इन्सानयित पर रहम आया और उसने उस गन्दे और ज़ालिमाना माहौल को बदल देने के लिये नबी का चुनाव किया, उसको पूरी शरीअत, पूरी व्यवस्था दी, उसको आख़िरी नबी बनाया, और उसको वो शरीअत दी जिसमें दुनिया के बदलते हुए हालात और इल्म हुनर के इन्तहाई तरक़्क़ी के आने वाले ज़मानों में जीवन की अपेक्षाओं के साथ भी ये जुड़े हो सकें और इन्सानियत के ख़ात्मे तक काम आ सके और जिससे इन्सान के बदलते हुए हालात में जो नयी अपेक्षाएं उभरें उनका भी इसमें जवाब मिलता रहे इस प्रकार मानवता के जीवन की सलामती और ख़ैर की कश्ती क़यामत तक राहत के साथ चल सकती है। और वो रहमत व नेमत व ख़ैर व बरकत जो नबी मुहम्मद स0अ0 लेकर आये सदैव रहने वाली है तथा अन्तर्राष्ट्री स्तर पर जारी है। और अल्लाह तआला का वादा क़ायम रहने वाला है कि हमने तुमको तमाम जहानों के लिये रहमत बनाकर भेजा है। सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तस्लीमन कसीरन कसीरा।

कुरआन मजीद का अदब

"और जब पढ़ा जाए कुरआन मजीद तो सुनो ख़ामोशी के साथ कान लगा कर, ताकि तुम पर रहम किया जाए"

कुरआन मजीद हमसे मुख़ातब है और उसकी सबसे पहली शर्त और मांग हमसे ये है कि हम बहुत अदब से कान लगाकर और ख़ामोशी के साथ उसको सुनें और दिल नशीं कर लें, इसका ईनाम हमको ये मिलेगा कि अल्लाह तआला दोनो जहां मे हमे अपनी रहमत सरफ़राज़ फ़रमाएगा।

यहां हमसे ये मांग नही है कि हम इसके अर्थ और मतलब पर महारत हासिल कर लें, बल्कि ये ज़रूर कहा गया है कि अदब व एहतराम, सुकून व ख़ामोशी और दिल लगाकर उसको सुने या पढ़ें, दूसरे शब्दों मे यूं कहा जा सकता है कि कुरआन की तिलावत की ज़ाहिरी शर्त पाकी, और अन्दरूनी शर्त अदब है। अगर इन दोनों चीज़ों पर अमल करते हुए हम अल्लाह की किताब अपने हाथ मे लेंगे या किसी क़ारी से सुनेंगे तो अल्लाह तआला अपना वादा अवश्य पूरा फ़रमाएगा और उसकी रहमत के आने की सबसे बड़ी पहचान ये होगी कि कुरआन मजीद के वो माने और मतलब, मज़ामीन और नुक्ते और वास्तविकता जो हमारी समझ से बाहर और हमारी योग्यता से बहुत बड़े थे केवल खुदा की तौफ़ीक़ से खुद ब खुद हमारी समझ मे आने लगेंगे, लेकिन ये बात धीरे-धीरे पैदा होगी, और पाकी और अदब ये दोनो चीज़ें जितनी पूरी होंगी उसी क़दर मज़मून व वास्तविकता से पर्दा उठता जाएगा, जो भौतिकवादी गन्दगी, दुनिया की व्यस्ततांए, दिमागी व दिली बिखराव, शैतानी वसवसे और नफ़्स की इच्छाओं की वजह से हमारी बसीरत पर अभी तक पड़ा हुआ था, वो कैफ़ियत जिसको हदीस मे सीने के वसवसे और मामलों मे इन्तिशार से ताबीर किया गया है और जिससे हुज़ूर अकरम स०अ० ने पनाह मांगी है इन्शाअल्लाह ख़त्म हो जांएगे। ये कुरआन पाक का वो पहला तोहफ़ा है और उसका शीरीं व लज़ीज़ फल (नतीजा) है जो एक मोमिन को पाकी व अदब के बाद खुदा की ओर से मिलता है।

मौ० सैय्यद मो० हसनी

www.abulhasanalinadwi.org